आधुनिक भारत के निर्माता लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक

राम जुवारी पी. एच डी. शोधार्थी

इतिहास विभाग, अवधेश प्रताप सिंह विश्वविद्यालय रीवा, (म०प्र०)

सारांश

भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में ऐसे कई महानायक हैं जिन्होंने अपने महान कार्यों से देश को स्वतंत्र कराने में अहम भूमिका निभाई है। ऐसे ही एक महान नेता हैं लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक। बाल गंगाधर को आधुनिक भारत का निर्माता कहा जाता है स्वतंत्रता के साथ देश को आगे बढ़ाने के लिए शिक्षा पर जोर दिया था। लाल-बाल-पाल के बाल गंगाधर तिलक को देश लखनऊ समझौता और केसरी अखबार के लिए भी याद करता है।असल मायनों में आधुनिक भारत की नींव रखने वाले लोकमान्य तिलक को देश आज भी याद करता है। आज के नेताओं को इस महान शख्स से सबक लेने की जरुरत है।भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के महान पुरुषों में लोकमान्य बालगंगाधर तिलक का नाम हमेशा स्वर्ण अक्षरों में लिखा जाता रहा है। स्वराज मेरा जन्म सिद्ध अधिकार है इस नारे को देने वाले बाल गंगाधर तिलक को लोग उनकी सेवाओं और कार्यों के लिए लोकमान्य कहते हैं।

मूल शब्द : शिक्षा, भारतीय, स्वतंत्रता, संग्राम, सुसंस्कृत, मध्यमवर्गीय इत्यादि ।

प्रस्तावना

बाल गंगाधर तिलक का जन्म 23 जुलाई, सन् 1856 ई० को भारत के रत्नागिरि नामक स्थान पर हुआ था। इनका पूरा नाम लोकमान्य श्री बाल गंगाधर तिलक था। तिलक का जन्म एक सुसंस्कृत, मध्यमवर्गीय ब्राह्मण परिवार में हुआ था। उनके पिता का नाम श्री गंगाधर रामचंद्र तिलक था। श्री गंगाधर रामचंद्र तिलक पहले रत्नागिरि में सहायक अध्यापक थे और फिर पूना तथा उसके बाद ठाणे में सहायक उप शैक्षिक निरीक्षक हो

© UNIVERSAL RESEARCH REPORTS | REFEREED | PEER REVIEWED
ISSN : 2348 - 5612 | Volume : 08 , Issue : 04 | October 2021

गए थे। वे अपने समय के अत्यंत लोकप्रिय शिक्षक थे। लोकमान्य तिलक के पिता श्री गंगाधर रामचंद्र तिलक का सन् 1872 ई। में निधन हो गया।

प्रारंभिक शिक्षा मराठी में प्राप्त करने के बाद गंगाधर को अंग्रेजी स्कूल में पढ़ने के लिए पूना भेजा गया। उन्होंने डेक्कन कॉलेज से स्नातक की पढ़ाई पूरी की। उनका सार्वजनिक जीवन 1880 में एक शिक्षक और शिक्षक संस्था के संस्थापक के रूप में आरम्भ हुआ। इसके बाद केसरी और मराठा उनकी आवाज के पर्याय बन गए।

भारत के वाइसरॉय लॉर्ड कर्ज़न ने जब सन् 1905 ई० में बंगाल का विभाजन किया, तो तिलक ने बंगालियों द्वारा इस विभाजन को रद्द करने की मांग का ज़ोरदार समर्थन किया और ब्रिटिश वस्तुओं के बहिष्कार की वक़ालत की, जो जल्दी ही एक देशव्यापी आंदोलन बन गया।

भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के नरम दल के लिए तिलक के विचार उग्र थे। नरम दल के लोग छोटे सुधारों के लिए सरकार के पास वफ़ादार प्रतिनिधिमंडल भेजने में विश्वास रखते थे। तिलक का लक्ष्य स्वराज था, छोटे- मोटे सुधार नहीं और उन्होंने कांग्रेस को अपने उग्र विचारों को स्वीकार करने के लिए राज़ी करने का प्रयास किया। इस मामले पर सन् 1907 ई० में कांग्रेस के सूरत अधिवेशन में नरम दल के साथ उनका संघर्ष भी हुआ। सन् 1908 में सरकार ने उन पर राजद्रोह का आरोप लगाकर मुकदमा चलाया। तिलक का मुकदमा मुहम्मद अली जिन्ना ने लड़ा। परंतु तिलक को 6 वर्ष कैद की सजा सुना दी गई। तिलक को सजा काटने के लिए मांडले, बर्मा भेज दिया गया

लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक: स्वराज मेरा जन्म सिद्ध अधिकार है

“स्वराज मेरा जन्म सिद्ध अधिकार है” के उद्घोषक लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक का भारत राष्ट्र के निर्माताओं में अपना एक विशिष्ट स्थान है। उनका जन्म 23 जुलाई, 1856 ई० को हुआ था। उनका सार्वजनिक जीवन 1880 में एक शिक्षक और शिक्षण संस्था के संस्थापक के रुप में आरम्भ हुआ। इसके बाद ‘केसरी‘ और ‘मराठा‘ उनकी आवाज के

पर्याय बन गए। इनके माध्यम से उन्होंने अंग्रेजों के अत्याचारों का विरोध तो किया ही साथ ही भारतीयों को स्वाधीनता का पाठ भी पढ़ाया।

बाल गंगाधर तिलक और कांग्रेस

वह एक निर्भीक सम्पादक थे, जिसके कारण उन्हें कई बार सरकारी कोप का भी सामना करना पड़ा। उनकी राजनीतिक कर्मभूमि कांग्रेस थी, किन्तु उन्होंने अनेक बार कांग्रेस की नीतियों का विरोध भी किया। अपनी इस स्पष्टवादिता के कारण उन्हें कांग्रेस के नरम दलीय नेताओं के विरोध का भी सामना करना पड़ा। इसी विरोध के परिणामस्वरुप उनका समर्थक गरम दल कुछ वर्षों के लिये कांग्रेस से पृथक भी हो गया था, किन्तु उन्होंने अपने सिद्धान्तों से कभी समझौता नहीं किया।

स्वराज हमारा जन्मसिद्ध अधिकार है और हम इसे लेकर रहेंगे' का नारा देकर देश में स्वराज की अलख जगाने वाले बाल गंगाधर तिलक उदारवादी हिन्दुत्व के पैरोकार होने के बावजूद कट्टरपंथी माने जाने वाले लोगों के भी आदर्श थे। धार्मिक परम्पराओं को एक स्थान विशेष से उठाकर राष्ट्रीय स्तर पर पहुंचाने की अनोखी कोशिश करने वाले तिलक सही मायने में 'लोकमान्य' थे।

अंग्रेजों के खिलाफ पत्रकारिता

तिलक शुरू से ही एक ओजस्वी वक्ता रहे। पहले गणित के शिक्षक के रूप में उन्होंने अपने संस्कृति को सम्मान देने पर बहुत जोर दिया और अंग्रेजी शिक्षा के शुरू से आलोचक रहे। उन्होंने देश में शिक्षा के स्तर में सुधार के लिए दक्कन शिक्षा समिति की स्थापना की। तिलक ने अंग्रेजी शासन के खिलाफ अपने दैनिक समाचारों मराठा दर्पण और केसरी में लिखना शुरू किया। इसी दौरान उन्होंने पूर्ण स्वराज की मांग की।

गणोत्सव और समाज सेवा

उन्होंने ने बंबई में अकाल और पुणे में प्लेग की बीमारी के दौरान देश में कई सामाजिक कार्य किए। 1893 में उन्होंने महाराष्ट्र में सार्वजनिक तौर पर गणेशोत्सव मनाने की शुरुआत की। इसमें गणेश चतुर्थी के दिन लोग नई गणेश मूर्ति घर में 10 दिन तक रखकर उत्सव मनाते थे। तिलक के दिमाग में विचार आया कि क्यों न गणेशोत्सव को घरों से निकाल कर सार्वजनिक स्थल पर मनाया जाए, ताकि इसमें हर जाति के लोग शिरकत कर सकें। तिलक के इस प्रयास में पेश्वाओं की भी सहयोग मिला।

क्रांतिकारियों की पैरवी

1907 में कांग्रेस गरम दल और नरम दल में विभाजित हो गई। तिलक गरम दल के प्रमुख नेता बने जिनके साथ लाला लाजपत राय और बिपिन चन्द्र पाल आ गए थे। इन तीनों को लाल-बाल-पाल के नाम से शोहरत मिली। 1908 में तिलक ने क्रांतिकारी प्रफुल्ल चाकी और खुदीराम बोस के बम हमले का समर्थन किया जिसकी वजह से उन्हें बर्मा (अब म्यांमार) में जेल भेज दिया गया। जेल से छूटकर वे फिर कांग्रेस में शामिल हो गए।

बर्मा की मांडले जेल

मांडले जेल में तिलक को किताबें पढ़ने की इजाजत नहीं दी गई। इस दौरान वे किसी को पत्र भी नहीं लिख सकते थे। मांडले जेल के दौरान ही उनकी पत्नी की देहांत हुआ तो उन्हें लिखे गए एक खत के जरिए यह जानकारी मिली। उन्हें अपनी पत्नी के अंतिम दर्शन भी देने नहीं दिए गए। जेल में लिखी उनकी किताब गीता रहस्य बहुत लोकप्रिय हुई और उसके बहुत सी भाषाओं में अनुवाद हुए

उपसंहार

भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के नरम दल के लिए तिलक के विचार ज़रा ज़्यादा ही उग्र थे। नरम दल के लोग छोटे सुधारों के लिए सरकार के पास वफ़ादार प्रतिनिधिमंडल भेजने में विश्वास रखते थे। तिलक का लक्ष्य स्वराज था, छोटे- मोटे सुधार नहीं और उन्होंने कांग्रेस को अपने उग्र विचारों को स्वीकार करने के लिए राज़ी करने का प्रयास किया। इस मामले पर सन् 1907 ई० में कांग्रेस के 'सूरत अधिवेशन' में नरम दल के साथ उनका संघर्ष भी हुआ। राष्ट्रवादी शक्तियों में फूट का लाभ उठाकर सरकार ने तिलक पर राजद्रोह और आतंकवाद फ़ैलाने का आरोप लगाकर उन्हें छह वर्ष के कारावास की सज़ा दे दी और मांडले, बर्मा, वर्तमान म्यांमार में निर्वासित कर दिया। 'मांडले जेल' में तिलक ने अपनी महान् कृति 'भगवद्गीता - रहस्य' का लेखन शुरू किया, जो हिन्दुओं की सबसे पवित्र पुस्तक का मूल टीका है। तिलक ने भगवद्गीता के इस रूढ़िवादी सार को ख़ारिज कर दिया कि यह पुस्तक सन्यास की शिक्षा देती है; उनके अनुसार, इससे मानवता के प्रति नि:स्वार्थ सेवा का संदेश मिलता है

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

[1] अनन्व (2015) कैसे बने “लोकमान्य “,।

[2] यामीन, र. (2014) बाल गंगाधर तिलक को ’लोकमान्य’की उपाधि से किस समय सम्मानित क्या गया था?

[3] स्वामी, ल. क.(2018) लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक, ।

[4] धमोरारमेश सर्राफ। (2018) स्वराज मेरा जन्मसिद्ध अधिकार है, कहने वाले तिलक पर लगा था राजद्रोह।

[5] धमोरा। (2018) *भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के वास्तुकार के रूप में जाने जाते हैं लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक*

[6] आधुनिक भारत के निर्माता हैं बाल गंगाधर तिलक। (2019), 1920

[7] सरस्वती य। (2017) बाल गंगाधर तिलक का ‘स्वतंत्रता हमारा जन्मसिद्ध

अधिकार है' वाला भाषण

[8] सिंहयोगेश। (2018) बाल गंगाधर का विवाह और पिता की मृत्यु, 1–1